गुरुवाणी

भगवान की, पूज्य-जनों की पूजा करना...पुष्प अर्पित करना... उनकी आरती...हवन करना, यह सब क्रियाएँ उचित हैं। हम, इन सभी क्रियाओं को सम्पादित करने से आपको नहीं रोक रहे हैं।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक ५, वाराणसी। रविवार १५ मार्च २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

शक्ति उपासना से सहज ही गृहस्थ भी वह सब कुछ बड़े ही सरलता से प्राप्त करते हैं जिसे योगी, ज्ञानी कठिन तप करने के बाद पाते हैं

यह पूरा आपका ब्रह्माण्ड ९ प्रभागों में बँटा हैं और इन नौ भागों की नव अधिष्ठात्री देवियाँ हैं। इन देवियों द्वारा ही इस पूरी सृष्टि का निर्माण, पालन, संचालन और संहार होता है। उन्हीं की इच्छा से सब कुछ होता है। एक पत्ता भी उनकी इच्छा के विपरीत नहीं हिलता डोलता। इसीलिये नवरात्रि में अलग-अलग इनकी ९ दिन पूजा होती है। प्रथम शैल पुत्रीश्च अर्थात् प्रथम दिन हिमालय पुत्री माँ पार्वती की पूजा होती है। माँ भगवती अनेक रूपों में सृष्टि में संवरित होती है। वह वर्षा की फुहार बनकर प्यासी धरती और धरती के जीवों को तृप्त करती है। रात्रि बनकर थके मांदे जीवों को अपने गोद में सुलाती हैं। अन्न के रूप में अंकुरित हो उनके भूख की ज्वाला बुझाती है। वही सृष्टि मात्र के जड़ जंगम की जीवन और प्राण है। यह महाशक्ति जो सर्व है, सर्वत्र है, सर्वत्र व्याप्त है उसे हम नवरात्रि के प्रथम दिन कलश स्थापित करके केन्द्रीभूत करते हैं और उसकी उपासना करते हैं।

हम एक शक्ति पीठ में जन्मे और उसमें हमारे जीवन का प्रतिपाल बीत रहा है। काशी एक महान शक्ति पीठ है और यहाँ नौ देवियों के मंदिर हैं। माँ शैलपुत्री का मंदिर वरुणा पुल के पास है, जहाँ आज काशी के श्रद्धालु जन प्रात: से रात्रि तक माँ के दर्शनार्थ जाते हैं। पर इससे भी बड़ा काशी का महात्म इसमें है कि वह महाशक्ति हमारे गुरु-भगवती के रूप में साक्षात अवरित हुई है और काशी नगरी में भक्तों के साथ चमत्कारिक लीलायें कर रही हैं।

उस महाशक्ति ने माँ गुरु के रूप में अवतरित होकर हमारी फँसी हुई गाड़ी का गढ़ से निकाला है और रास्ते पर लाया है। अब हमारा मार्ग प्रशस्त है। उसके दिखाये हुए मार्ग पर हमें निर्बाध चलना है। पर वह शक्ति जो हमें मिली और जिसका हमें भरोसा है उसे बड़ा संजोकर रखना है और उसका सदुपयोग करना है। यही हम नवरात्रि अनुष्ठान में सीखते हैं। अनुष्ठान का तात्कालिक लाभ हम अनुभव करते हैं। कम से कम ९ दिन के लिये हमारे सभी भाई, अनेकानेक सांसारिक झंझटों से मुक्त हो उस अपूर्व शान्ति का अनुभव करते हैं और सबमें, सरलता, सरसता, सौम्यता और माँ गुरु के वात्सल्य की धारा प्रवाहित होती है।

परम शक्ति रूप रंग, लिंग से परे हैं। पर सृष्टि के सृजन हेतु वह रूप, रंग, लिंग आदि धारण करती हैं। सृजन हेतु ही उस महाशक्ति ने स्त्री पुरुष का रूप धारण किया और ये दोनों लिंग सभी जीवों में पाये जाते हैं और पायी जाती है। दोनों वह आकर्षण शक्ति भी जिसके द्वारा दोनों अपनी संतति सृजन करते हैं। फिर वही शक्ति माँ का वात्सल्य बनकर एवं पिता के स्नेह का रूप धारण कर उनका पालन करती है। वह महाशक्ति सदा इस प्रकार हमारे सृजन और परिपालन में रत है।

वह संहार भी करती हैं ऐसा कहा जाता है पर उसके संहार में भी सृजन और परिपालन ही अरिष्ट रहता है। वह महामारी, अकाल, तूफान, युद्ध, अनेक प्रकार की दुर्घटनाओं के रूप में मृत्यु बन कर आती है और हमारा विनाश करती है। पर यह नाश भी निर्माण के लिये ही होता है, नित नूतनता के लिये होता है। नूतनता ही प्रकृति का सौन्दर्य है, शत्रुता है, कृपा प्रसाद है जिसका पान कर हम आह्लादित और आनन्दित होते हैं।

परम शक्ति के इस आनन्दमयी परम कल्याणकारी स्वरूप का पान मानव जाति अनादि काल से करती चली आ रही है। मानव के अनुभव का इतिहास इस बात का साक्षी है। सिंधु सभ्यता के अभिलेख एवं सिक्के प्रमाणित करते हैं कि उस समय का मनुष्य भी उस परमशक्ति का भान मातृत्व में ही किया और माता के रूप में उसकी उपासना की। मातृ उपासना की यह चिरंतन धारा वेद, पुराण मध्य एवं आधुनिक काल में जाने अनजाने जागृत है। आज भी गाँवों में ग्राम्य देवी की उपासना होती है। आज भी वह घर-घर की उपष्य देवी है। भारत के प्राय: प्रत्येक गाँव के मध्य या बाहर भगवती का स्थान देखा जा सकता है और ग्रामीण जनमानस में यह भावना देखने को मिलती है कि भगवती काली ही हमारी रक्षा करती है।

भारत ही नहीं प्राचीन भूमध्य सागरीय इतिहास भी मातृ उपासना के चिन्हों से परिपूर्ण है। मेसोपोटामिया के लेखों एवं बेवीलोनियाँ की मुद्राओं से प्रभावित होता है कि पृथ्वी और उपजि की मातृ रूप में उपासना ही प्रधान थी। फारस, मिश्र, सीरिया में मेसोपोटामिया आदि में मातृ देवी की रक्षिका के रूप में उपासना होती थी। आज भी मरियम और फातिमा की उपासना यूरोपीय और अरब फारस के देशों में होती है। पढ़े लिखे लोग गिरजाघरो और मस्जिदों में उस परम शक्ति के निरंकार रूप की पूजा और उपासना करते हैं। पर आज भी गिरजा घरों में पूजा कराते समय पादरी प्रथम ही कहते हैं कि हे मरियम मेरे लिये तू परमेश्वर से प्रार्थना कर अर्थात् उनके उपासना एवं आस्था का सहारा मातृ रूप ही है। ठीक उसी प्रकार से जैसे हिन्दूओं में वैष्णव लोग विष्णु की उपासना करते हैं पर कहते हैं 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव' हम माने या न माने पर हमें आस्था और उपासना के लिये उसके मातृ रूप का ही सहारा लेना पड़ता है।

इसलिये कि उस परम शक्ति की कृपा की चरम अभिव्यक्ति मातृत्व में ही प्रलक्षित होती हैं। हम इसे सहज और प्रत्यक्ष रूप से देखते और अनुभव करते हैं। माता का स्नेह पुत्र के लिये कितना प्रगाढ़, कितना अतुलनीय होता है जिसका अल्प वर्णन एक बहु चर्चित लोक कथा से होती है। एक बार एक विषयी व्यक्ति अपनी प्रेमिका के पास गया तो उसने कहा मैं तुम्हें अपना प्रेमी तभी समझूँगी जबकि तुम अपनी माता का सिर काट कर मुझ दे दोगे। वह निर्मोही और विषयी पुत्र घर गया और धोखे से अपनी माँ का सिर काट कर चलने लगा। पर घर से बाहर निकलते ही उसे किसी चीज की ठोकर लगी और वह लुढ़क गया तब तक माँ के कटे सिर से आवाज आयी- बेटे! तुम्हें चोट तो नहीं लगी? धन्य है माता का स्नेह! अतुलनीय है माता

शेष पृष्ठ दो पर

उपासक एवं उपासना

गुरु ज्ञान के गर्भ से ही इन्द्रियाँ अनुकूल होती हैं, साधना सुगम हो सिद्ध होती है। पर यह गर्भ धारण भी उसकी कृपा से ही सम्भव होती है।

हमारे प्रेरणा देने से ही देवी का अनुष्ठान किये होंगे। यह जो नौ रोज का दु:ख कष्ट है, उसके लिये क्षमा करेंगे। नौ मास मनुष्य गर्भ में भी दु:ख भोगता है। यह भी नौ दिन है। फिर जन्म ही हो जायेगा। तब सुख ही सुख रहता है। जब तक गर्भ का दु:ख गुजर रहा है, उसके लिये आप लोग ज्यादा चिन्तनीय नहीं होइयेगा।

नानक कहते हैं **''नानक नन्हें रहिये जस धासन में दूब, सब धासन जल धासन जल जईहन दूब खूब की खूब।''** बरसाती घास बहुत उत्पन्न होते हैं, सब जल जाते हैं, उसी जमीन में दूब उगा रहता है। ज्यादा उगता है न मिटता है, सदैव अपने जीवन में आस्था हर एक व्यक्ति को ऐसा ही रखना चाहिये। कितने ही महापुरुषों को जीवन में कठिन दु:ख झेलना पड़ता है। जैसे सिख गुरु परम्परा के गुरुओं को कतल कर दिया गया, उनके बच्चे को दीवार में चुन दिया गया। पर वह (सिख) इतने पनपे कि कहा जाता है कि ऐसा कोई देश नहीं जहाँ सिख नहीं दिखते। सुकरात के साथ भी ऐसा हुआ, उनको विष दिया गया। ईसा को शूली दिया गया। दयानन्द को समाप्त कर दिया गया था। इस तरह जो कठिनाई, दु:ख, परेशानी है, वह हमें एक नया मोड़ देती है। हमारे में परिपक्वता लाती है।

हर क्षेत्र में कठिनाई, परेशानी है। उससे धैर्यवान रहना चाहिये। घबराना नहीं चाहिए। रामायण में देखे होंगे श्री राघवेन्द्र कितना रो रहे थे, बिलख रहे थे, जिस दिन उनकी सीता का हरण हो गया था। बन्धु-बान्धव छोड़कर गये थे, प्रजा छोड़ दिये थे, वे जंगल में भटक रहे थे। आँखों से आँसू गिर रहा था। उनके बन्धु लक्ष्मण ने समझाया। विपत्ति सम्पत्ति रात दिन की तरह है। आता है चला जाता है।

जो धैर्यवान हैं, वही महापुरुष हैं। अपने सामने जो कुछ भी कठिनाई हो, परेशानी हो, उसके लिये धैर्य रखना चाहिये। प्रयत्न करना चाहिये। धीरे-धीरे वह समाप्त हो जाता है। नये सिरे से उसका जिन्दगी होती है। नये सिरे से उसका जीवन आता है। हर एक महापुरुष के जीवन में यह घटता है।

हमारी उपासना, साधना उसी तरह प्रेरित करती है जिस तरह न्याय है, उचित है, सर्वव्याप्य है, सब जन हिताय है, सब प्राणियों के लिये हितकर है। इसे अपना व्यक्तित्व अपना श्रेय समझाना चाहिये। इसे ईश्वरीय प्रेरणा समझना चाहिये। हमारी उपासना, पूजन धैर्यवान बनने के लिये प्रेरित करती है। ईश्वर के साथ जो लगाव वाला मार्ग हैं, उसको प्रशस्त करना चाहिये। सहस्रों वर्ष तक, सहस्रों जन्म लेते हुए, हम भटकते-भटकते चलते रहते हैं। ग्लोब का नक्शा देखिये, उस गोलन्बर पर जहाँ से चलिये वहाँ से उसकी दूरी एक ही रहता है। घूमते जाइये, सोचिये खत्म हो जायेगा, पर कहीं भी खत्म नहीं होगा। अपने जीवन जीवन चक्र में सहस्रों वर्ष से हम चलते आ रहे हैं। पशु-पक्षी नाना प्रकार की योनियों में हम जन्म लेते रहते हैं।

हम जो अभी हैं थोड़ी देर बाद नहीं रहते, जो आज हैं कल नहीं रहते। आप जब सूक्ष्म दृष्टि से देखियेगा तो आपको इसी तरह का विचार, अपना

शेष पृष्ठ तीन पर

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**

e-mail–kinaram@rediffmail.com

www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

शक्ति उपासना से सहज ही गृहस्थ भी.....

का वात्सल्य! एक तार्किक व्यक्ति कह सकता है कि यह कथा सत्य नहीं हो सकती पर इतना तो वह भी मानेगा कि इसमें एक अकाट्य भावनात्मक सत्य है।

लौकिक माता के प्रति इस प्रकार की भावना समाज में है तो उस पारलौकिक माता के प्रति जनमानस में सहज आस्था क्यों नहीं होती? मातृ उपासना, उपासना की सरल सहज पद्धति है। यह पद्धति गिरजाघरों, मंदिरों और मस्जिदों में भले ही न प्रचलित हो पर घर-घर में सदा से प्रचलित रही है और रहेगी। इस उपासना से साधारण गृहस्थ वह अमूल्य निधि सहज ही प्राप्त करते हैं जिसे योगी सन्यासी बड़े-बड़े संत, महात्मा एवं ज्ञानी बड़े प्रयास के बाद पाते हैं।

हर हर महादेव

विश्वास और आस्था रखें

अपने में पूर्णता के लिए विश्वास देना अति आवश्यक है। मित्र बन्धुओं बान्धव में विश्वास दें। ईश्वर प्राप्ति के लिए विश्वास ही प्रथम सीढ़ी है। विश्वास एक धर्म है। यह आनन्दमय जीवन की पूँजी है। समाज के हर क्षेत्र में आवश्यक है, विश्वास दें। साधु देवता पड़ोसी तथा नौकरी में विश्वास दें और लें। इससे अपने साथियों में एक उत्तम स्थिति आयेगी। अपने साथियों में अगर विश्वास देंगे तो आपको आनन्द प्राप्त होगा। अन्त में आपको आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने कार्यों में उन्नति करें। भगवान आपको सही मार्ग दिखाये।

किसी कार्य को अच्छे ढंग से चलाने के लिए चार-पाँच व्यक्ति ही काफी हैं। आध्यात्मिक परिषद के द्वारा ज्ञान-प्राप्ति से एक विशाल ज्ञान ही एकत्रित हो सकती है। चिन्तन के लिए विशाल वृक्ष जैसा ज्ञान प्राप्त होता है, जिसके छाये में हजारों लोग शान्ति का अनुभव प्राप्त करते हैं।

किसी चीज में आस्था की आवश्यकता होती है। आस्था को स्थायी रूप देने से स्थायित्व हो सकती है। हमारे देश में आध्यात्मिक स्वतंत्रा प्राप्त है, जिससे सभी लोग अपने में आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। अपने गोष्ठियों में विचारों के संग्रहण से बहुत ही अच्छा गुण आता है। आप अपने अन्दर के देवता को जागृत करें उसी से आपको सच्चा आनन्द प्राप्त होगा।

सबसे बड़ी चीज है पथ। लाख अनुग्रह, प्रयत्न कोई नहीं काम आयेगा। अगर पथ ठीक न हो।

सबसे बड़ा रोग मानसिक रोग होता है। ज्ञान, भक्ति, पूजा सब रोग है। सब बीमारी है। नाव मिला है पार करने के लिए। यह सब कुछ नहीं भायेगा। ये तीन, भूख, प्यास, मैथुन सभी रोग है। वह अभिन्न यंत्र से शून्य है। ठहरता कौन है जो असली होगा। राम लक्ष्मण असली थे माया जो रावण का था, सैकड़ों रावण बना देता था (लेकिन वह नहीं रहा) सहस्रों नकली बन

शेष पृष्ठ तीन पर

फार्म-4

(नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन स्थान	: वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	: पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	: अरुण कुमार सिंह
(क्या भारत के नागरिक हैं?)	: जी हाँ
4. प्रकाशक का नाम	: अरुण कुमार सिंह
(क्या भारत के नागरिक हैं?)	: जी हाँ
5. सम्पादक का नाम	: चन्द्र नाथ ओझा
(क्या भारत के नागरिक हैं?)	: जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, कीनाराम स्थल, रविन्द्रपुरी (शिवाला), वाराणसी।

मैं अरुण कुमार सिंह एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनांक : 28.02.2015 **(अरुण कुमार सिंह)**

द्वितीय पृष्ठ का शेष

विश्वास और आस्था रखें

जाय जहाँ राम वाली तीर उठेगी तो भाग (सैकड़ों रावण) जायेंगे।

हम वास्तव में क्या हैं। हम को क्या करना है? माया से बना जो जाल है सब खत्म हो जायेगा। भेष से भीख मिलता है मगर भेष भीख तक ही (सीमित) रखें। कोट पैन्ट पहन कर जाने से भीख नहीं मिलेगा किन्तु साधु भेष में जाने से भीख मिल जायेगा। भेष से ठगे नहीं। यह सामाजिक अन्याय होगा। ईश्वर के प्रति अन्याय होगा।

अपना भगवान, ईश्वर उसको पर्दा में न रखें। बुरा काम जो करता है। उसकी दिशायें गवाही देगी जिसके छिपाने से पर्दाफाश होगा। किसी चीज से घृणा नहीं करना चाहिए। राम कृष्ण परमहंस ने देवी को प्रसन्न रखने के लिए कोई घृणा नहीं किये। कालीदास ने महाराज का प्रवाह नहीं किया। जब देवता, इष्ट प्रसन्न होगा तो बुरा भी भला होगा। अपना इष्ट देवता खुश नहीं तो कुछ नहीं। इष्ट लक्ष्य को कहते हैं। इस पृथ्वी पर अमन चैन से रहे, हम अपने इष्ट देवता की प्रसन्नता चाहते हैं। वशिष्ट, तुलसी आज भी अपनी पुस्तकों में जीवित हैं। क्योंकि बुरा का बुरा, भला का भला कर्म लगेगा। कर्म के अनुसार ही हमें पुन: जन्म लेना होता है।

हे देवी पुन: अब हम गर्भ में न हो। जन्म मृत्यु में दु:ख होता है। भोगों को भोगने के लिये पुन: जन्म होता है। इसीलिए वाम मार्ग का पूजा करते हैं। भूने बीज के सदृश्य बन जाओ। भूना बीज पुन: बोया नहीं जाता। वासना रह जाता है तो पुन: जन्म होता है। देवी से अनुग्रह है कि हमें प्रेरणा दें।

द्वितीय पृष्ठ का शेष

उपासक एवं उपासना

मन, आपके शरीर का घटना बढ़ना स्वास्थ्य पर उसकी प्रक्रिया होना, जो कल का निश्चय था, वह आज नहीं, यह सब बातें प्रस्फुटित होती रहती हैं। घटती रहती है, ठीक है। घटने दें। इस तरह से जो हम एक विचित्र सा बन जायेंगे। उससे शंका बनी रहेगी, दुर्घटना होती रहेगी। हम अपने जीवन में इस चीज को नियमित कर लें। क्योंकि वह भगवती, वह देवता जो है, उसके जितना हम सान्निध्य में चले जायेंगे। यदि हम उसके अनुकूल होने के लिये इच्छुक हैं तो फिर हममें जो घट रहा है, घटने दें। हम रोकते हैं तो न हम अपने अनुकूल हो सकेंगे न उस पर उपास्य के अनुकूल हो। हमारा जीवन चक्र बराबर चलता रहेगा।

अपने जीवन चक्र को एक ऐसा मोड़ दे, जिससे एक व्यक्तित्व आवें, जिससे धैर्य के साथ काफी समन्वय हो। किसी तूफान, किसी भी परेशानी से अपने चित्त को उकताना नहीं चाहिए।

इससे जीवन में कभी-कभी एक असंतोष हो जाता है। अपने आप ही एक बोझ हो जाता है। जैसे बहुत सी स्त्रियाँ स्वयं के बोझ हैं। उनके शरीर से कोई ध्यान, धारणा कुछ नहीं होता। बहुत से विचार, अनिष्ट की भावनायें अपने पर न लादते फिरे, यह शरीर, यह हाथ, यह पांव उसी इष्ट के लिये हैं, उनकी प्रेरणा से काम होगा। ऐसा जिसका बना है, वह अनुशासित रहता है, शाश्वत भी होता है इस भूमण्डल पर शासन करने का बहुत बड़ा अधिकारी भी होता है।

आवश्यक सूचना

सभी सम्मानित संस्थान के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सदस्यता संख्या 100 के आगे से सभी सदस्यों की सदस्यता निरस्त कर **10 फरवरी दिन मंगलवार 2015** से नया कार्ड एवं सदस्यता संख्या आवंटन संस्थान के प्रधान कार्यालय में किया जा रहा है।

अतः आप सभी सदस्यों से अनुरोध है कि उक्त तिथि तक प्रधान कार्यालय से सदस्यता फार्म भरकर प्रमाणिक पहचान पत्र की फोटो प्रति एवं दो फोटो के साथ कार्यालय में यथाशीघ्र जमा करें ताकि आप को सदस्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किया जा सके।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

0542-2277155, मो0: 9794487878

चौथे पृष्ठ का शेष

अघोर-एक सुगम उपासना

मनोभाव बड़ा दिव्य तथा उज्जवल होना चाहिए। किसी के कुछ कहने से उदास, निराश और अस्वस्थ नहीं होना चाहिए। बहुत से लोगों की अनाप-सनाप बातें सुनकर श्रद्धा तथा स्नेह पर आपमें शंका उत्पन्न हो सकती है। यदि आप शंका करेंगे अपने किये हुए कर्मों पर, तो उसका फलाफल आपके हाथ से चला जायेगा। इसीलिए मेरे भी किसी कड़वे वाक्य पर आप ध्यान न देंगे। मैं आपसे यही निवेदन करूँगा कि आप जिस कार्यक्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, लगन के साथ आप करते रहेंगे और उन रेखाओं को भी देखते रहेंगे जिन रेखाओं की पहचान से हमें ज्ञान होता है। आकाश के उन तारों से यह मालूम होता है कि वह हमारे इष्ट के आगमन, मिलन और हमारे में आवावेश (समावेश) का दिन है। उसकी तरंगें हममें प्रविष्ट कर रही हैं और हमारे में यह घटने वाला है। कुछ समय पहले से ही यह सूचना मिलनी प्रारम्भ हो जाती है। उस सांकेतिक सूचना को जब आप प्राप्त करें तो समय पर आप सतर्क रहे तभी आप उस चीज को सही ढंग से जान सकेंगे और सुन सकेंगे। यदि उस सूचना की अनदेखी करेंगे तो मुझे आशा है कि आप उससे वंचित भी रह सकते हैं। यह भगवती श्रद्धा और स्नेह की मूर्ति तो है ही, वह बहुत प्रकृति रूप में भी सामने आ सकती है हमारी मनोदशा को विकृत समझ कर वह भगवती न मालूम आपके समक्ष कैसे, किस ढंग से उपस्थित होंगी, यह आपके सुझाव पर निर्भर करती हैं। बन्धुओं! आप धैर्य रखें। साहस से काम लें। परिस्थितियों से डरे नहीं और प्रार्थना को महत्व दें क्योंकि प्रार्थना में बहुत ताकत है। प्रार्थना के बल पर ही हम पर आक्रमण करते रहे हैं। इसलिए हम भी एकत्रित हुआ करें। अक्रामक के साथ बैठेंगे, उठेंगे अपने में कोई विघटन नहीं होगा तो हमें कोई छिन्न भिन्न नहीं कर सकता। हम विजय करेंगे, प्राप्त करेंगे।

चैत्र नवरात्र

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष चैत्र नवरात्र 21 मार्च, 2015, दिन-शनिवार के शुभ दिन प्रारम्भ हो रहा है, इस शुभावसर के कार्यक्रम तथा पालनीय नियम इस प्रकार है-

चैत्र नवरात्र प्रारम्भ

21 मार्च 2015	**शनिवार**	**प्रथमा**	**मध्याह्न 1.08 मिनट तक (कलश स्थापना)**
22 मार्च 2015	**रविवार**	**द्वितीया**	**1.57 मिनट तक दिन में**
22 मार्च 2015	**सोमवार**	**तृतीया**	**दिन में 9.00 तक**
24 मार्च 2015	**मंगलवार**	**चतुर्थी**	**प्रातः 7.24 मिनट**
25 मार्च 2015	**बुधवार**	**पंचमी**	**प्रातः 6.08 मिनट तक**
26 मार्च 2015	**गुरुवार**	**षष्ठी**	**देर रात (सूर्योदय के पहले 5.20 तक षष्ठी) अर्थात् षष्ठी तिथि की हानि**
26 मार्च 2015	**गुरुवार**	**सप्तमी**	**देर रात (सूर्योदय के पहले 5 बजे तक)**
27 मार्च 2015	**शुक्रवार**	**अष्टमी**	**देर रात (सूर्योदय के पहले 5.11 मिनट तक अष्टमी)**
28 मार्च 2015	**शनिवार**	**नवमी**	**देर रात (सूर्योदय के पहले 5.54 मिनट तक नवमी)**

(घट स्थापना 21.03.2015 शनिवार प्रातः 8.29 या 11.41 से 12.30 बजे तक)

(महानिशा पूजन 27.03.2015 शुक्रवार को मनाया जायेगा।)

30 मार्च 2015	**सोमवार**	**कलश विसर्जन**

नवरात्र के पालनीय नियम

1. शील (ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय निग्रह), 2. मौन (संतोष), 3. जमीन पर सोना। अपने आसन पर न तो दूसरों को बैठाना एवं न तो सुलाना ही तथा दूसरे के आसन पर स्वयं भी न तो बैठना और न ही सोना, 4. तप (तामस की समाप्ति, शक्ति की उत्पत्ति), 5. अल्पाहार, 24 घंटे में एक बार आहार लेना, 6. इष्टदेव का जप, 7. पाठ, 8. ध्यान, 9. संकल्प विकल्प रहित चित्त, 10. शरीर से किसी भी प्रकार का अपराध न करना, 11. किसी भी दिशा में इष्टदेव की अनुभूति कर प्राणिपत् करें (साष्टांग दण्डवत्), 12. माता–पिता एवं गुरु से विनीत व्यवहार करना। इन सभी क्रियाओं के फल को श्रीगुरु चरणों में अर्पित करें, इससे जो भी फल प्राप्त हो, वह इष्टदेव को अर्पण करें एवं नमन करें।

अघोर-एक सुगम उपासना

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

पिछले अंक का शेष

धर्म बन्धुओं!

कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका के साथ बैठा हो, सोया हो उस समय यदि हम उसके पास जाय तो हमसे बड़ा दुष्ट, बदमाश कौन हो सकता है? इसी तरह जो आराधना और अनुष्ठान में हो, यदि हम उसे अपनी दृष्टि से देखने जाये तो हमारा मन का कुप्रभाव पड़ेगा इसे हम नहीं समझते हैं। इस कुप्रभाव का प्रतिफल दूसरे तरह का घटता है। तो जो साधक है। जो प्रेमी है, अपने प्रेमिका के साथ लगा है, उस समय यदि हम बार-बार उसके सामने आयें तो यह हमारे लिए अच्छी दृष्टि नहीं रखेगा। जब वह आनन्द से प्रेम से नाचता हो तब उसके साथ खुशियों में मिले तो देखें आपके जेब को भर देता हैं। पर जब साधक साधनारत है, उस समय कोई आये तो उसका मन कितना कठोर होता हैं कि कैसा आदमी कहाँ से आ गया? उसको हम प्रभावित करना चाहते हैं, लाभ उठाना चाहते हैं तो लाभ नहीं उठा सकेंगे।

कहीं देवी का शृंगार हो रहा है, पूजन हो रहा है और हम बिना मतलब वहाँ चले गये।

एक हाकिम बैठा है कचहरी में। उसका मूड किस तरह का है? यह बिना सोचे समझे हम पहुँच गये कि हम बयान देना चाहते हैं जब की वह दूसरे के बयान के बारे में सोच रहा है तो उस समय आपको कोर्ट से निकलवायेगा कि नहीं? आपके मुकदमे में वह क्या फैसला करेगा। आप खुद सोच सकते हैं। इसी तरह हमारे गुरु, देवता किस मूड में हैं, सोचना चाहिये। इलाहाबाद में साई साहब एक फकीर थे। चले जा रहे थे। एक पुलिस जिसका नाम यदुनाथ था, पांव छूआ तो उन्होंने एक थप्पड़ मारा और कहा कि तुमने ऐसा क्यों किया, हम न जाने किस मूड में थे। तुमको प्रणयम का प्रणाम दूर से ही कर लेना चाहिये था तो हम आपसे कहेंगे कि हमारे न्यायालय में जो न्यायमूर्ति बैठा है, जो हमारा देवता हैं, इष्ट है, उसके उपासना और मंत्र के साथ उसके मूड को भी पहचानना होगा। यदि कुसमय में पट खोल देंगे। पहुँच के घंटी बजाना शुरू कर देंगे तो क्या प्रभाव पड़ता हैं?

मंदिर के पंडों को देखते हैं। दरिद्र होकर घूमते फिरते हैं, रहते हैं उस मंदिर के ही पास और कहते हैं कि मैं विन्ध्याचली का भक्त हूँ, विश्वनाथजी का भक्त हूँ। यह प्रभाव होता है, कुसमय में देवी देवता के पास बड़ा भद्दा लगता है। शिष्टाचार के खिलाफ होता है। आप ही कुछ बात करते रहे अपने मित्रों से और चार आदमी आकर खड़े हो जाये सिर पर तो कितना बुरा लगेगा? यह छोटी सी बात हैं लोकाचार की। आपको जब बुरा लगता है तो इसी तरह उसकी स्थिति नहीं पहचानेंगे तो हमारा सारा किया कराया व्यर्थ हो जायेगा और वो क्या फैसला देंगे हम कह नहीं सकते।

अघोर सूत्र में उपासना का जो विधान है, वह कोई ज्यादा भिन्न नहीं है। इसमें पहले व्रत करने का विधान है। विधि निषेध तथा गुण दोष को ध्यान में रखकर वह व्रत लेते हैं कि मैं अमुक कार्य करूँगा और अमुक कार्य नहीं करूँगा।

व्रत करने के विधान के साथ ही अघोर सूत्र के २१वें अध्याय में एक यह भी वाक्य है कि जो कुछ या जिन्हें मैं बुरा समझता हूँ और जो बहुत ही बुरे हैं, ऐसा लोकापवाद है, वह भी किसी दिन बहुत महत्व के वस्तु हो सकते हैं इसलिए उनका त्याग न करो और उन्हें बिल्कुल ग्रहण भी मत करो। समय पर वह विष भी कभी-कभी अमृत का कार्य कर जाता है। उसका अपने आप में एक अलग चरित्र हैं। उसे जहाँ है वहीं रहने दो। इसी २१वें अध्याय में यह भी एक वाक्य है कि हम मछली खायेंगे सिर्फ जाल नहीं लगायेंगे क्योंकि उससे न मालूम कितने प्राणियों को समाप्त करना पड़ेगा। हम एक को ही आहार बनायेंगे, जिसकी आयु समाप्त हो चुकी है। इसलिये वह कटिया लगाते हैं जिससे एक ही आए। उसके विपरीत पाश्चात्य देश के लोगों का दर्शन है कि हम जाल फेंके और जितना हैं सभी जाल में फँस जाय तथा हमारे चंगुल में रहे। मगर अघोर सूत्र में ऐसी बात नहीं है। वह कहते हैं कि ना! ना! हम सभी को बिल्कुल अपने पास नहीं आने देना चाहते क्योंकि सबका अधिकार नहीं है और सभी को एक ही कार्य के लिए ईश्वर ने नहीं बनाया है सभी लोगों की मनोवृत्ति एक ही तरह नहीं होती तथा सभी का सोचने एवं कार्य करने का ढंग भिन्न-भिन्न होता है। इसलिए हम उसको ही अपने पास ले आयेंगे जिस पर हमें पूर्ण आशा तथा विश्वास होगा कि इस एक ही चिराग से बहुत से चिराग जलाये जा सकते हैं। उस एक ही प्राकाश देने वाले स्थान अर्थात् पावर हाउस से बिजली के तारों को खींचकर नगरों तथा गाँवों में घर और कमरों को प्रकाशित किया जाता है। वहाँ कोई भेद भाव नहीं होता हैं। अमीर गरीब सभी अपनी क्षमता के अनुसार पावर लेकर अपने घरों को प्रकाशित कर सकते है।

इसी में वह शक्ति सूत्र भी है कि वह जो शक्ति है जिसे हम देवी या नाना प्रकार के देवता कहकर अलग-अलग ढंग से उनका बंटवारा करके समझते हैं, वह उस शक्ति को समझने का हमारा ढंग है न कि उसका ढंग है। उसके ढंग में तो एक ही ढंग है जिसमें और कोई ढंग नहीं है। उस समय चल रहे जनरेटर का उदाहरण देते हुए पूज्य अघोरेश्वर ने कहा जिस जनरेटर से बिजली आ रही है वह एक ही है और उसका एक ही सुभाव है बिजली देना अब उस बिजली को प्राप्त करके आप भिन्न-भिन्न अर्थों में बदल सकते हैं, गाड़ी चला सकते हे, मोटर चला सकते है, डीजल भरने की मशीन को चलाकर डीजल भर सकते है, प्रकाश कर सकते हैं, घंटी बजा सकते हैं और विभिन्न कार्यों में आप उसका उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार शक्ति सूत्र में वर्णित उस शक्ति से तंत्र-मंत्र, जादू-टोना इत्यादि का भी कर सकते हैं तथा उस ईश्वर या अघोर की प्रकृति है उस प्रकृति को भी जान सकते हैं और साथ ही आपने जो व्रत लिया है, उस व्रत को भी पूर्णरूपेण जीवन में पालन कर सकते हैं। जिसमें यह कहा गया है कि हमें इस अनुष्ठान के बाद अपनी सात्विक जीविका की तरफ भी उद्धत होना चाहिए। जीवन भर या साल भर या हर महीने उसी कार्य को करने के लिए यह जीवन नहीं है।

यह समयबद्ध है कि इतना काल तक इस कार्य को सम्पन्न करूँगा उसके पश्चात् अपनी जीविका के लिए भी प्रयत्न करूँगा जिसके चलते अपने आश्रितों बन्धु बान्धव, पुत्र, पौत्र, कुटुम्ब, वयोवृद्ध माता-पिता का भी भरण-पोषण कर सकूँ। यदि हममें तिरस्कार की भावना होगी कि सिर्फ हम तो हमारा वह पूर्णत: या बिल्कुल अधूरा में रह जायेगा। उसे अधूरा रहने का कारण यही होगा कि हमारी जो साधना है, चिन्तन, मनन है, वह चिन्तन हमारा व्यर्थ न चला जाय।

प्रिय बन्धुओं! इस अघोर सूत्र के २१वाँ रुद्राक्ष में हमारे पास जो मंत्र सूत्र है, चिन्तन सूत्र है तथा उसके आगमन का जो सूत्र हमारे पास है, इन सभी को अनेक तरह से आप तद्रुपता कर सकते हैं और इसे अपने आपमें समावेश करा सकते हैं। उसके समावेश के पश्चात् आपके शरीर से जो अच्छी तरंगे निकल रही है वह दूसरों को भी सुख पहुँचायेंगी। आपके शरीर से यह जो गन्दी तथा गलत तरंगें निकल रही हैं यह दूसरों को भी और आपको भी दु:ख पहुँचायेंगी। दूसरों को दु:ख पहुँचावे या नहीं, मगर अपने को तो वह जला ही देगी। इसीलिए बहुत ऐसे वैसे (गलत) मनुष्यों तथा प्राणियों का संग साथ उस सूत्र में वर्जित किया गया हैं।

जैसे पशुपालको संग साथ वर्जित किया गया है क्योंकि रात दिन पशुओं का ही चिन्तन मनन करते-करते वह विकृत हो जाते हैं क्योंकि उनका स्वभाव भी वैसा ही हो जाता है। लड़ने भिड़ने तथा तरह-तरह के अवांछित आचरण तथा व्यवहार उनमें देखे जाते हैं। इसीलिए उनके नजदीक कम जाने को उस सूत्र में बताया गया है। इनका संग तथा इनसे वार्तालाप करना बिल्कुल वर्जित किया गया है।

जब आप सच्ची जीविका में उत्साह के साथ लगेंगे और आपमें जब भगवती, भगवान या पराप्रकृति को जानने की उत्सुकता है तो आपमें उनका आर्विभाव होगा, प्राकट्य होगा और जान भी सकते हैं। आपसे कोई भिन्न नहीं है, बन्धु! जितना सब आप देवी, देवता, भगवान, ईश्वर देख रहे हैं, यह सभी आपके द्वारा सुनिश्चित किये गये हैं यह अघोर सूत्र के २३वाँ रुद्राक्ष का ही वाक्य है जो मैं आपसे कह रहा हूँ। यह जो कुछ भी है सभी को समय, काल और परिस्थितियों के मुताबिक अच्छे द्रष्टाओं ने समाज को नयी दिशा तथा नयी प्रेरणा देने और थके हुए समाज को नया उत्साह देने के लिए उत्पन्न किया। जब आप उस सच्चाई को ठीक से जान जायेंगे तो आप सोचेंगे कि हमारा जो आचरण व्यवहार और आदर्श है, यदि वह शुद्ध रहेगा तो सब शुद्ध रहेगा। सभी देवता, देवी, भगवान, भगवती, तंत्र मंत्र इत्यादिक हस्तगत रहेंगे। आंवले के फल के समान वह हमारे हाथों में रहेगा जिसे बहुत से उपासक लोग भगवती (भग से इति) कहकर सम्बोधित करते हैं। बहुत से उपासक लोग इसे कहते हैं कि मैं भक्तों का भी भक्त हूँ। अब हे भगवती आप के जो उपासक हैं, चिन्तक हैं, भक्त हैं, उसका मैं चिन्तन करता हूँ। इसी प्रकार अघोर सूत्र में बहुतेरे सूत्र हैं जिन सभी के बारे में आपसे कहना आवश्यक नहीं समझता हूँ। क्योंकि आपका जो उपासना, चिन्तन और मनन चल रहा है, वह सूत्र के बारे में नहीं है। उपासना (उप आसन) अर्थात् जहाँ हमारा इष्ट हैं, अपनी प्रकृति को हम संजोयें। ऐसी परिस्थिति में आपका

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

☞ **हे भगवती! मैं इस जीवन में आपसे और कोई चीज नहीं माँगता। हमको इतना पूर्ण कर दें कि हमें किसी तरह का अभाव ही न रहे और यदि हममें अभाव नहीं होगा तो हम आपसे याचना ही नहीं करेंगे।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी